अध्याय 21. स्वराज्य की नींव (एकांकी)

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

अति लघूत्तरीय प्रश्न-

1. लक्ष्मीबाई ने स्वयं को अकेला क्यों कहा?

Ans:- लक्ष्मीबाई ने स्वयं को अकेला इसलिए कहा क्योंकि उनके पास शक्ति और साधन होते हुए भी उनके सहयोगी विलासिता और अव्यवस्था में डूबे हुए थे।उन्हें लगा कि स्वराज्य के संघर्ष में वे अकेली पड़ गई हैं।

2. जूही किस आधार पर लक्ष्मीबाई को निराशा के अनौचित्य की बात कहती है?

Ans:- जूही इस आधार पर कहती है कि लक्ष्मीबाई गीता पढ़ती हैं और कर्म व बलिदान में विश्वास रखती हैं, इसलिए उनके लिए निराश होना उचित नहीं है।

3. जूही किसे अपना स्वामी मानती है?

Ans:- जूही अपने देश को अपना स्वामी मानती है।साथ ही वह सरदार तात्या को भी अपना स्वामी मानती है, पर देश को सर्वोपरि रखती है।

4. "सारा आकाश धूम घटाओं से छाया हुआ है" का क्या अर्थ है?

Ans:- इसका अर्थ है कि चारों ओर संकट, युद्ध और विनाश का वातावरण छाया हुआ है।

लघूत्तरीय प्रश्न-

1. मुंदर ने विलासिता में किसे डूबा हुआ बताया?

Ans:- मुंदर ने राव साहब को विलासिता में डूबा हुआ बताया।

2. लक्ष्मीबाई ने कौन-सी प्रतिज्ञा की?

Ans:- लक्ष्मीबाई ने यह प्रतिज्ञा की थी कि वे अपनी झाँसी किसी को नहीं देंगी।

3. पेशवा की सेना को किसने तथा कहाँ हराया?

Ans:- पेशवा की सेना को जनरल रोज़ की सेना ने मुरार में हराया।

4. लक्ष्मीबाई तात्या से अपनी कौन-सी चिंता प्रकट करती है?

Ans:- लक्ष्मीबाई तात्या से यह चिंता प्रकट करती हैं कि यदि विजय न मिले तो सेना और युद्ध-सामग्री को सुरक्षित निकाल लिया जाए और उनकी वीरता पर कोई कलंक न लगे।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न-

1. पाठ का शीर्षक 'स्वराज्य की नींव' क्यों रखा गया है?

Ans:- पाठ का शीर्षक 'स्वराज्य की नींव' इसलिए रखा गया है क्योंकि इसमें स्वराज्य प्राप्ति से अधिक उसके लिए बलिदान, त्याग, सेवा और संघर्ष को महत्त्व दिया गया है। लक्ष्मीबाई और उनके साथी जानते हैं कि भले ही उन्हें सफलता न मिले, लेकिन उनका संघर्ष आने वाले स्वराज्य की नींव बनेगा।

2. वीरता किसे पाकर धन्य है? स्पष्ट कीजिए।

Ans:- वीरता महारानी लक्ष्मीबाई को पाकर धन्य है। उनके भीतर अदम्य साहस, आत्मबल, देशप्रेम और बलिदान की भावना है। नात्या के अनुसार, उनके रहते वीरता पर कभी कलंक नहीं लग सकता।

3. पाठ के आधार पर लक्ष्मीबाई के व्यक्तित्व का वर्णन कीजिए।

Ans:- महारानी लक्ष्मीबाई एक वीर, निडर, दृढ़ निश्चयी और देशभक्त शासिका हैं। वे स्वराज्य के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने को तैयार हैं। उनमें नेतृत्व क्षमता, आत्मसम्मान और कर्तव्यबोध स्पष्ट दिखाई देता है। वे विलासिता और अनुशासनहीनता की कटु आलोचना करती हैं तथा कर्म, त्याग और बलिदान को ही स्वराज्य का मार्ग मानती हैं।